प्रातः क्लास 10/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद हैं ?

ओमशान्ति। बच्चे इतना समय यहां बैठे हैं दिल में यह आता है कि हम जैसे शिवालय में बैठे हैं। शिवबाबा भी याद आ जाता, स्वर्ग भी याद आ जाता है। यह है वैश्यालय। अभी वैश्यालय से घृणा आती है। शिवालय को तो बहुत अच्छी रीत याद करना है। याद से ही सुख होता है। यह भी बुद्धि में याद रहे हम शिवालय में बैठे हैं। तो खुशी भी होगी। जाना तो आखरीन शिवालय में ही है। शान्तिधाम में कोई बैठ तो नहीं जाना है। वास्तव में शान्तिधाम को भी शिवालय कहेंगे। सुखधाम को भी शिवालय कहेंगे। शिवबाबा ही तुमको शान्तिधाम में ले जाते हैं। शिवबाबा रहते भी वहां ही हैं। तो दोनों को शिवालय कहेंगे। दोनों को शिवबाबा स्थापन करते हैं। तुम बच्चों को याद भी दोनों को करना है। वह शिवालय शान्ति के लिए, वह शिवालय सुख के लिए। यह तो है दुःखधाम। अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो। शान्तिधाम और सुखधाम के सिवाय और की भी याद न होनी चाहिए। भल कहां भी बैठे हो, धंधे आदि में बैठे हो तो भी बुद्धि में दोनों शिवालय याद होना चाहिए। दुःखधाम को भूल जाना है। बच्चे जानते हैं यह वैश्यालय अभी खत्म हो जाना है। यहां बैठे बच्चों को झुटका आदि भी नहीं खाना चाहिए। बहुतों की बुद्धि कहां–2 और तरफ़ चली जाती है। माया के विघ्न पड़ते हैं। तुम बच्चों को बाप घड़ी–2 कहते हैं बच्चे मन्मनाभव। भिन्न–2 युक्तियां भी बतलाते हैं। यहां बैठे हो तो भी बुद्धि में याद करो हम पहले शान्तिधाम शिवालय में जावेंगे फिर सुखधाम शिवालय में आवेंगे। ऐसा याद करने से पाप कटते जावेंगे। जितना याद करते जावेंगे उतना ही तुम कदम को बढ़ाते जावेंगे। यहां और कोई ख्यालात में नहीं बैठना चाहिए। नहीं तो तुम औरों को नुकसान पहुंचाते हो। फायदे के बदली और ही नुक़सान करते हो। आगे निष्ठा में जब बैठते थे तो सामने कोई को जांच करने के लिए बिठाया जाता था; कौन झुटका खाते हैं, कौन आँख बन्द कर बैठते हैं। तुम बड़ा खबरदार रहते थे। बाप भी देखते रहते हैं इनका बुद्धि योग कहां भटकता है क्या या झुटका खाते हैं क्या। ऐसे भी बहुत आते हैं जो कुछ भी समझते नहीं हैं। ब्राह्मणियां ले आती हैं। शिवबाबा के आगे बच्चे बड़े अच्छे आनी(ने) चाहिए। जो गफलत में न रहे; क्योंकि यह कोई आर्डिनरी टीचर नहीं है। बाप बैठ सिखलाते हैं। तो यहां बहुत ही सावधान होकर बैठना चाहिए। बाबा 15 मिनट शान्ति में बिठाते हैं, तुम तो घंटा दो घंटा भी बैठते हो तो जो कच्चे हैं उन्हों को सावधान करना चाहिए। ब्राह्मणियां जो भी सेन्टर पर रहती हैं वह तो पूरा जानती नहीं हैं। सावधान करने से सुजाग हो जावेंगे। कुछ समय याद में रहेंगे। नहीं तो जैसे कि विघ्न डालते हैं; क्योंकि बुद्धि कहां न कहां भटकती रहती है। सभी तो महारथी नहीं हैं ना। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे भी हैं।

बाबा आज विचार–सागर–मंथन करके आये थे कि म्युजियम में अथवा प्रदर्शनी में तुम बच्चे जो शिवालय, वैश्यालय और पुरुषोत्तम संगमयुग 3 सीन दिखाते हो। यह बहुत ही अच्छा है समझाने के लिए। यह बहुत बड़ी–2 बनानी चाहिए। सबसे बड़ा हाल इसके लिए होना चाहिए। जो मनुष्यों की बुद्धि में झट बैठे। कई बच्चे तो जो बनाते हैं उसमें ही खुश रहते हैं; परन्तु विचार चलाना चाहिए इनमें हम इम्प्रुवमेन्ट कैसे लावें। शिवालय, वैश्यालय और बीच में पुरुषोत्तम संगमयुग यह तो बहुत अच्छा बनाना चाहिए। इनसे मनुष्यों को अच्छी समझानी मिल सकती है। समझेंगे हम तो कलियुगी रावण राज्य वैश्यालय के हैं। ठीक–2 कर समझाना चाहिए। सिवाय पुरुषार्थ के कोई भी सद्गति को पावेंगे नहीं। तपस्या में भी तुम 5–6 को बिठाते हो; परन्तु नहीं। 10–15 को तपस्या में बिठाना चाहिए। बड़ा बनाना चाहिए। वैश्यालय तो बहुत बड़ा दिखाना चाहिए। उसमें सभी दिखाना चाहिए इसमें यह यह होता है। यह भीख मांगते हैं। संन्यासी क्या करते हैं, बड़ा–2 बनाकर क्लीयर अक्षर में लिख देना चाहिए कलियुगी पतित वैश्यालय। प्रेजेन्ट(वर्तमान) यह वैश्यालय। तो मनुष्य समझें हम तो वैश्यालय में हैं। तुम इतना समझाते हो फिर समझते थोड़े ही हैं। जैसे कि बन्दर बुद्धि हैं। तुम मेहनत करते हो समझाने लिए। पत्थर बुद्धि हैं ना। तो जितना हो सके अच्छी रीत समझाना चाहिए। लिखना चाहिए वर्तमान –

कलियुगी भ्रष्टाचारी वैश्यालय। तो मनुष्य समझें अभी की बात है। जो सर्विस में रहते हैं उन्हों को सर्विस बढ़ाने का ख्याल करना चाहिए। प्रोजेक्टर, प्रदर्शनी में भी इतना मजा नहीं है जितना कि म्युजियम में। प्रोजेक्टर से तो कुछ भी समझेंगे नहीं, फालतू है। सबसे अच्छा है म्युजियम। भल छोटा हो। छोटे 6 कमरे हैं उसमें भी म्युजियम हो। एक कमरे में तो शिवालय, वैश्यालय, पुरुषोत्तम संगमयुग का सीन हो। इस समय सभी हैं भ्रष्टा० एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं। मनुष्य कोई समझते थोड़े ही हैं कि हम भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्ठाचारी कोई हो न सके। इतना जोर से समझाना है। बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बेहद का बाप, बेहद का टीचर आये हैं तो बैठ थोड़े ही जावेंगे कि बी०ए०, एम०ए० पास करेंगे। बाप बैठा थोड़े ही रहेगा। थोड़ी टाइम में चला जावेगा। बाकी थोड़ा समय है सो भी जागते नहीं हैं। अच्छी–2 तो(जो) बच्चियां होंगी वह कहेंगे इन 400–500 लिये क्यों मुफ्त टाइम बरबाद करें। फिर शिवालय में हम पद क्या पावेंगे। बाबा देखते हैं कुमारियां तो फ्री हैं। भल कितना भी बड़ा .....(पगार) वाला हो तो भी यह तो जैसे मुठी में भुगरा है। यह सभी खलास हो जावेंगे। कुछ भी रहेगा नहीं। बाप भुगरे मुठी छुड़ाने आये हैं; परन्तु छोड़ते नहीं हैं। इसमें है चने की मुठी, इसमें है विश्व की बादशाही। वह तो पाई–पैसे के चने हैं। उनके पिछाड़ी कितने हैरान होते हैं। कुमारियां तो फ्री हैं। वह पढ़ाई तो पाई–पैसे की है। उनको छोड़कर रूहानी नॉलेज पढ़ें तो मगज़ भी खुले। ऐसी–2 छोटी–2 बच्चियां बड़ों–2 को बैठ नॉलेज दे। बाप आये हैं शिवालय स्थापन करने। यह तो मानते हैं यह सभी मिट्टी में मिल जावेगा। चने भी नसीब में नहीं आवेंगे। किसके मुट्ठी में 5 चने अर्थात् 5 लाख होंगे वह भी खत्म हो जावेगा। उनको छोड़ने लिए मनुष्य कितना तरफते हैं। बाप कहते हैं बच्चे अभी टाइम बहुत थोड़ा है। ऐसे मत समझो आठ वर्ष पड़े हैं। दिन–प्रतिदिन हालतें खराब होती जाती हैं। अचानक आफतें आ जाती हैं। मौत भी अचानक होती है। मुट्ठी में चने होते भी प्राण निकल जाते हैं। तो मनुष्य को इस बन्दरपने से छुड़ाना है। सिर्फ़ म्युजियम देख खुश नहीं होना है। कमाल कर दिखाना है। मनुष्यों को सुधारना है। बाप तो तुम बच्चों को विश्व की बादशाही दे रहे हैं। बाकी 8 वर्ष। मैं तो समझता हूँ 5 वर्ष भी मुश्किल होंगे। चने भी किसके नसीब नहीं होंगे। सभी खत्म हो जावेंगे। इससे तो क्यों नहीं बाप से विश्व की बादशाही ले लो। कोई तकलीफ़ की बात नहीं। सिर्फ़ बाप को याद करना है और स्वदर्शन चक्र फिराना है। भुगड़ों की मुट्ठी खाली कर, हीरे–जवाहरों से मुट्ठी भरकर जाना है। आगाखां तो तुम्हारे कुछ भी नहीं हैं। अल्प काल के लिए सुख(ी) रहते हैं। वह भी बड़े गन्दे होते हैं। शराब पीना, रेस में जाना। तो बाप समझाते हैं इन भुगड़े(चने) मुट्ठी पिछाड़ी प्राण मत गँवाओ। मनुष्य श्मशान में ले जाते हैं, हाथ खाली जाते हैं। तुम्हारे हाथ भरतू जानी है। तुम बुद्धि से समझ सकते हो हमको तो बहुत बड़ी कमाई करनी है। यह दो/पाँच रुपया तो कुछ नहीं है। जो अच्छी रीत यह समझते हैं उनको दिल में आता होगा हम अपनी जीवन भुगड़ों पिछाड़ी क्यों बरबाद करें। हाँ, कोई बुजुर्ग है, बाल–बच्चे बहुत हैं तो उनको सम्भालना होता है। कुमारियों लिए तो बहुत ही सहज है। कोई भी आवे उनको यह समझाओ बाप हमको यह बादशाही देते हैं। तो बादशाही लेनी चाहिए ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हमारी हीरों से मुट्ठी भरती है। बाकी और तो सभी विनाश हो जावेंगे। खाली हाथ जावेंगे। बाप समझाते रहते हैं। तुमने 63 जन्म पाप किये हैं। विकार में गये हो। मुख्य पाप है विकार का। दूसरा पाप है बाप और देवताओं को गाली देना। डिफेम किया है ना। विकारी भी बने हैं तो ग(ा)ली भी दी है। बाप की कितनी ग्लानि की है। तो बाप बैठ बच्चों को बैठ समझाते हैं। टाइम न गँवाना चाहिए। ऐसे नहीं बाबा हम याद नहीं कर सकते हैं। बोलो, बाबा हम अपन को याद नहीं कर सकते हैं। अपन को भूल जाते हैं। देह–अभिमान में आना गोया अपन को भूलना। अपन को ही आत्मा याद नहीं कर सकते हो तो फिर बाप को कैसे याद करेंगे। बहुत बड़ी मंजिल है। सहज भी बहुत है। बाकी हाँ, माया अपोजीशन करती है। गीता आदि पढ़ते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते। भारत की है ही मुख्य गीता। हरेक धर्म का अपना

एक शास्त्र है। जो धर्म स्थापन करने वाले हैं उनको गुरु भी नहीं कह सकते। यह भी बड़ी भूल है। सद्गुरु तो एक ही है। बाकी गुरु कहलाने वाले तो (ढेर) हैं। कोई ने बाढे का काम सिखलाया, इंजीनियरी का काम सिखलाया तो वह भी गुरु हो गया। हरेक सिखलाने वाला गुरु होता है। सद्गुरु तो एक ही है। अभी तुमको सद्गुरु मिला है। वह सत्य बाप भी है तो सत् टीचर भी है। इसलिए बच्चों को जास्ती गफलत नहीं करनी चाहिए। यहाँ से अच्छी रीत रिफ्रेश होकर जाते हैं फिर घर में जाने से ही यहां का सभी भूल जाते हैं। गर्भ–जेल में भी बहुत सजा मिलती है। वहां तो गर्भ महल होता है। विकर्म कोई होता ही नहीं जो सजा खानी पड़े। यहां तुम बच्चे समझते हो हम बाप से सम्मुख पढ़ रहे हैं। बाहर अपने घर में तो ऐसे नहीं कहेंगे। वहां समझेंगे भाई पढ़ाते हैं। यहां तो डायरैक्ट बाप के पास आते हो। बाकी बच्चों को अच्छी रीत समझाते हैं। बाप की और बच्चों की समझानी में वजन हो जाता है। बाप बैठ बच्चों को सावधान करते हैं। बच्चे–बच्चे कह समझाते हैं। तुम शिवालय और वैश्यालय को समझाते हो। बेहद की बात है। यह शिवालय–वैश्यालय क्लीयर कर दिखाओ तो मनुष्य को कुछ लज्जा आवे। वह तुम ऐसे ही हँसी–कुड़ी में समझाते हो। हँस–2 कर समझाओ तो अच्छी रीत समझे। रहम करो अपन पर। क्या इस वैश्यालय में ही रहना है। बाबा की खयालात तो चलती है कैसे–2 समझावे। बड़ी बन्दर बुद्धि है। समझते ही नहीं। कितनी तुम मेहनत करते हो फिर भी जैसे डब्बे में ठिकरी। हाँ–2 करते जाते हैं। बहुत अच्छा है, यह गाँव में समझाना चाहिए। खुद नहीं समझते। साहूकार पैसे वाले लोग तो समझेंगे ही नहीं। बिल्कुल ध्यान ही नहीं देंगे। वह पिछाड़ी में आवेंगे। फिर तो टू लेट हो जावेंगे। न उनका धन काम में आवेगा न योग में ही रह सकेंगे। बाकी हाँ जो सुनेंगे सो प्रजा बनेंगे। गरीब बहुत ऊँच पद पा सकते हैं। तुम कन्याओं पास क्या है। कन्या को गरीब कहा जाता है; क्योंकि बाप का वरसा तो बच्चे को मिलता है। बाकी कन्या दान दिया जाता है। दान देते हैं तब, जबकि वैश्यालय में जाती है। शिवालय में जाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कहेंगे वैश्यालय में जाओ तो पैसे देंगे। शिवालय में जाते हो तो एक पाई भी नहीं देंगे। मनोवृत्ति देखो कैसी है बन्दरों की। तुम कोई से भी डरो मत। खुली रीति समझानी चाहिए। फूर्त होना चाहिए। तुम तो बिल्कुल सच्च कहते हो। यह है संगमयुग। उस तरफ है भुगड़े मुठ। उस तरफ़ है हीरों की मुठ। अभी तुम बन्दर से बदल मंदिर लायक बनते हो। पुरुषार्थ कर हीरे जैसा जन्म लेना चाहिए ना। शिकल बहादुर शेरनी मिसल होनी चाहिए। कोई–2 की शिकल जैसे रिढ़ बकरी मिसल है। थोड़ा ही आवाज से डर जावेंगे। तो बाबा सभी को खबरदार करते हैं। कन्याओं को तो फँसना नहीं चाहिए। और ही बन्धन में फँसेंगे तो फिर विकार के लिए दन्ड खावेंगे। ज्ञान अच्छी रीत धारण करेंगे तो विश्व की महारानी बनेंगी। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व की बादशाही देने आया हूँ; परन्तु कोई तो पत्थर बुद्धि समझते ही नहीं। नसीब में नहीं है। बाप है ही गरीब निवाज। गरीब हैं कन्याएं। माँ–बाप शादी नहीं करा सकते हैं तो दे देते हैं। तो उन्हों को नशा चढ़ना चाहिए हम अच्छी रीत पढ़कर पद तो पावें। अच्छे स्टूडेन्ट जो होते हैं वह पढ़ाई पर ध्यान देते हैं, हम पास विथ ऑनर हो जावेंगे। उनको ही फिर स्कॉलरशिप मिलती है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। वह भी 21 जन्म लिये। अल्प काल की बात नहीं। यहां है अल्प काल का सुख। आज कुछ मर्तबा मिला, कल मौत आ गया। खलास। तमोप्रधान दुनियां है ना। दिन–प्रतिदिन आयु कम होती जाती है। यहां एवरेज आयु 35 वर्ष। वहां तो है 125–150 वर्ष। योगी और भोगी में फर्क है ना। मनुष्य तो बिल्कुल पत्थर बुद्धि हैं। तो बाप कहते हैं गरीबों पर जास्ती ध्यान दो। साहूकार मुश्किल उठाते होंगे। सिर्फ कहते हैं बहुत अच्छा है। यह संस्था बहुत अच्छी है। बहुतों का कल्याण करेगी। अपना कुछ भी कल्याण नहीं करते। बहुत अच्छा कहा, बाहर गये, खलास। माया डंडा उठाये बैठी है। हवास ही गुम कर देती है। एक ही थप्पर(ड़) लगाने से अकल चट कर देती है। बाप समझाते हैं भारत का हाल देखो क्या हो गया है। बच्चों ने ड्रामा को अच्छी रीत समझा है। देखो यह डॉक्टर (खेमचन्द)

है आंखों की ऑपरेशन करने जाते हैं। साथ में ज्ञान का तीसरा नेत्र भी देते हैं। बाप भी खुश होते हैं बहुतों का कल्याण करते हैं। हीरों–जवाहरों से अच्छी रीत मुठ भरनी है। अभी तुम यहां के हो नहीं। हम रावण राज्य में हैं नहीं। अभी हम जा रहे हैं। टांग इस तरफ़, मुँह उस तरफ़ है। बच्चों को जब भी समय मिलता है तो विचार सागर मंथन करना चाहिए। कैसी–2 युक्ति बतावें। क्या बात है जो इतना माथा मारते हुये भी समझते नहीं हैं। बहुत पत्थर बुद्धि हैं। भगवान के सिवाय कब कोई सुधार न सके। बाप को ही आना पड़ता है ऐसे पत्थर बुद्धियों को पारस बुद्धि बनाने। कृष्ण कब आवेगा, कैसे आवेगा यह भी किसको पता नहीं। वह तो 40 हजार वर्ष कह देते। इतनी पुरानी बात किसको याद भी नहीं आ सकती। तुम सुनाते हो नई बात। तो यह मेहनत करने भगवान को आना पड़ता है। आकर बन्दरों को मंदिर लायक बनाते हैं। तो पूरा पुरुषार्थ करो। इसमें गफलत करेंगे तो वहाँ पहुँच न सकेंगे। बाप जानते हैं कौन अच्छी सर्विस करते हैं। कुमारियों की पढ़ाई में बुद्धि अच्छी होती है। आजकल तो नौकरी में भी लग जाते हैं। अभी वहाँ क्या मिलता है। भुगड़े मुठ मिलती है और क्या। यहां विश्व की बादशाही। वजन करो ना। अभी है संगम। पुरानी दुनियां खलास होनी है तो हीरों से मुठ भरनी चाहिए या भुगड़ों से। हीरे मुठ का पूरा जानते नहीं हैं। भुगड़े मुठ पर ही राज़ी हो जाते हैं। समझाना चाहिए हम ईश्वरीय सर्विस करते हैं। मनुष्य को देवता, शिवालय का मालिक बनाते हैं। वास्तव में कन्याओं को थोड़े ही नौकरी कर माँ–बाप वा भाईयों आदि की पालन करनी है। सास, ससुर भी बहू की कमाई नहीं खाते। लॉ नहीं; परन्तु आजकल तो भूख हो गई है। बच्चियां भी कमाकर सारे घर को खिलाती हैं। इतने दुःखी हैं जो अपन को छुड़ा भी नहीं सकते हैं। अभी तो तुम बच्चों को शेरनी बनना चाहिए। श्रीमत पर चलना चाहिए। विघ्न तो पड़ेंगे। अत्याचार होंगे। माताएं ही पुकारती हैं। कलश भी बाप माताओं को देते हैं। यह भी बाबा ने समझाया है। तुम कब फिमेल से मेल, कब मेल से फिमेल बनते हो। भल इस समय मैजोरिटी माताओं की है, वहां तो कोई पुरुष भी बन जावेंगे ना। ऐसे नहीं फिमेल सदैव फिमेल ही बनती हैं। तो बाप कहते हैं खास कुमारियों को अपन पर रहम करना है। नहीं तो अपने ऊपर पहाड़ गिराते हैं विकार में जाकर। बाप तो आकर निर्विकारी बनाते हैं। उस कॉलेज आदि के मर्तबे को भी देखो। यह मर्तबा भी देखो। पुरुषार्थ कर ऊँच पद पाना है। माताओं–कुमारियों को तो बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। बहुतों की सर्विस करनी है। मददगार बैठा है बाबा। कड़े(बड़े)–2 म्युजियम खोलो। समय नजदीक आता जाता है। किराया असद से डरने की बात नहीं। एक दिन आवेगा जो तुमको पांव पड़, हाथ जोड़कर ले जावेंगे यह हॉल लो सर्विस के लिए। तुम भी फट् से कहेंगे अरे, यह क्या शर्म नहीं आता। तुम कोसखाना बनाते रहते हो। कन्याएं जब ऐसी बैठ समझावें तब ही हृदय विदीर्ण होंगे। बाकी मकान आदि खरीद थोड़े ही करनी है। बच्चों के पैसे काम में लानी चाहिए। ऐसे ही थोड़े ही छोड़ देना है। भल दो/तीन हजार किराया लेवे। बड़ा म्युजियम खोलो। यह ईश्वरीय कॉलेज है। जिससे कैरेक्टर्स सुधरते हैं। मुख्य है विकार का कैरेक्टर्स और विकारी मनुष्यों को यह कैरेक्टर्स अच्छा लगता है। दुनियां बहुत ही खराब है। 8–10, 12 वर्ष की बच्चियां समझती हैं छोटे बच्चों साथ विकार करना खेल है। बाप बच्चियों साथ खेल करते। बात मत पूछो। साधु–संत आदि सभी फँसे हुये हैं। है ही विकारी दुनियां। गुरु–गुसाईं भी गन्द करते हैं। पतित बन पड़ते हैं। बाप समझाते हैं अभी चर्ये–खर्ये भक्ति पूरी हुई। डाके उतरते–2 नीचे गिर पड़े हो। रावण एकदम लात मार देती है। वह है लतसंग। मनुष्य गुस्से में होते हैं लात मारते हैं। रावण ने भी लात मार सीढ़ी से ही उतार दिया है। यह है बेहद की बात। बाप कहते हैं इसमें गफलत मत करो। झुटका मत खाओ। स्टुडेन्ट कब झुटका थोड़े ही खाते हैं। कब उबासी नहीं देते। न पढ़ने वाले पिछाड़ी में उबासी देते रहेंगे। झुटके खाते रहेंगे। बाबा समझ जाते हैं यह क्या पद पावेंगे। स्वर्ग में जावेंगे, नाम होगा। बाकी पद में तो रात–दिन का फर्क है ना। बाबा खास कुमारियों के लिए समझाते हैं। बोलो, हम अपना जीवन हीरे जैसा बनाने यह रूहानी सेवा करते हैं। तुम चाहते भी हो श्रेष्ठाचारी बनें। सो तो पवित्र ही श्रेष्ठाचारी बनेंगे। अपवित्र बनेंगे नहीं। कन्याओं का भी कॉलेज हो जिसमें भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बने। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।